पशु शव परीक्षण का महत्व

डॉ संजीव कुमार डॉ दीपक कुमार डॉ इमरान अली
विकृति विज्ञान विभाग, बिहार वेटरनरी कॉलेज पटना

पशुओं के अनेक रोगों को पहचाननें के लिए शव– परीक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण विधि हैं। जब तक किसी रोग की ठीक तरह से पहचान नहीं हो जाती, उसक इलाज और रोकथाम प्रायः असम्भव हो जाते हैं। आजकल रोगों की पहचान करने के लिए विभिन्न तरीकें प्रयोग में लाये जाते हैं। परन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों को छोड़कर, किसी एक ही विधि से रोग की पहचान संभव नहीं होती। बुद्धिमानी से तथा कुशलतापूर्वक सम्पादित शव– परीक्षा, रोग की पहचान में बहुत ही महतवपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। तथा बहुत से रोगों में अकेले ही कुछ रोगों के पहचान में निर्णायक सिद्ध होती हैं। शव परीक्षा वास्तव में शरीर के अन्दर की उन अनदेखी या कालपिनक बातों की सत्यता का ज्ञान कराती हैं। जिनकें विषय में चिकित्सक रोगी के जीवन पर्यन्त अटकलें ही लगाता रहता हैं। शव परीख न केवल भीतर के अगों व ऊतकों में घटित विशेषताओं या परिवर्तनों को अनावृत्त करती हैं। बल्कि कुछ ऐसे तथ्यों या कारणों को भी सामने लाती हैं। जो बाहर से देखनें में नहीं आते । शव परीक्षा रोग के प्रांरम्भ से अन्त तक की समस्त क्रमवार घटनाकों और उनके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कारणों को उजागर करती हैं। कभी –कभी ऐसी विक्षतियॉ भी सामने आती हैं, जो कल्पनातीत होती हैं। और शायद ऐसे ही .....विक्षति का विस्तार, रोग का प्रसार एवं अनुमान तथा सत्य के बीच का अन्तर उदघाटित हो जाता हैं। शव परीक्षा के उचित सम्मान तथा जनमत समर्थन प्राप्त होने के पश्चात ही, चिकित्सा व विकृति विज्ञान में अदभुत प्रगति संभव हो सकी हैं।

शव परीक्षा के मामलें में पशु चिकित्सक , मानव , चिकित्सकों की अपेखा अधिक अच्छी स्थिति में रहता हैं। पशु शव परीक्षा सम्पन्न होने में हमारी संस्कृति, रीति,रिवाज एवं प्राचीन मान्यतांए उतनी अवरोधक नही हैं। जितनी की मानव शव परीक्षा के लिए हैं।

यदि शव परीक्षा के पशचात आवशयक परीक्षण, जैसे ऊतकविकृति परीक्षा (Histopathological examination), जीवाणु पृथक्करण (Bacterial Isolation) ,रासायनिक परीक्षण , परजीवी अभिज्ञान एवं ऐसी अन्य आवशयक प्रयोगशाला प्रक्रियायें सम्पन्न की जाएं, तो रोग से उत्पन्न होने से लेकर प्रसार तक सम्पर्ण श्रंखला का भलीभॉति अनुमान अथवा ज्ञान हो जाता हैं। यदि ऐसा रोग – लक्षण एवं उपचार विज्ञान द्धारा परिणति स्वास्थलाभ नहीं होता, तो शव परीक्षा द्धारा विकृति जनन (Pathogenesis) के विषय में प्राप्त ज्ञान , एक बड़ी उपलब्धि होती हैं। पुराने जमाने में जरूर ऐसा था कि लोग मृत शरीर को चीर, फाड़ करना अनुचित एवं अनावशयक समझतें थें, परन्तु दिन–प्रतिदिन हुई वैाानिक प्रगति ने लोगों की ऑखें खोल दी हैं। और आजकल शव– परीक्षा को विशेषकर पशुओं जॉच का एक अभिन्न अंग माना जाने लगा हैं।